2

दो प्रेरक प्रसंग-स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री

हमारे पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी का व्यक्तित्व सच्चाई, ईमानदारी और देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत था। यहाँ इनके जीवन से संबंधित दो प्रेरक प्रसंग दिए जा रहे हैं। इन प्रसंगों के माध्यम से कक्षा में बच्चों के मानवीय मूल्य विकसित किए जा सकते हैं।

बीसवीं शताब्दी का पहला दशक। पाँच-छह साल का एक नन्हा बालक साथियों के साथ स्कूल से घर लौट रहा था। रास्ते में आम का एक बगीचा पड़ा। बच्चों का मन हुआ, क्यों न उस बाग में जाकर फल तोड़कर खाए जाएँ। सब बच्चे राज़ी हो गए। नन्हा बालक भी साथियों के साथ आम के बगीचे में गया। सभी बच्चे माली की नजर बचाकर फल तोड़ने लगे। लेकिन नन्हा बालक चुपचाप एक कोने में खड़ा रहा। साथियों ने उकसाया, ''अरे बुत-सा क्यों खड़ा है नन्हे, तू भी क्यों नहीं तोड़ लेता दो-चार आम?'' लेकिन नन्हे के अंत:करण ने चोरी से आम तोड़ने की अनुमति नहीं दी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे?

इसी बीच एक गुलाब के पौधे पर खिले फूल पर उसकी दृष्टि पड़ी। सुंदर गुलाब को देखकर उसका जी ललचा गया और गुलाब का फूल तोड़ लिया। तभी बगीचे का माली डंडा फटकारता वहीं आ धमका। उसे देखते ही और लड़के तो भाग खड़े हुए, लेकिन नन्हे जहाँ का तहाँ खड़ा रहा। माली ने उसे पकड़ लिया और कहा,

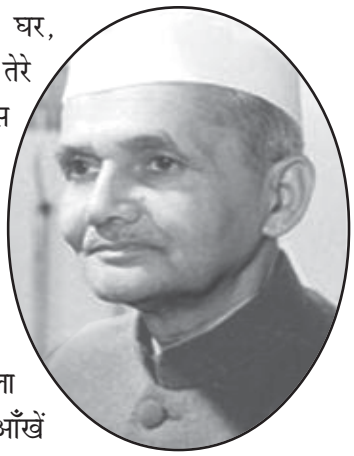

''कहाँ है तेरा घर, चल मैं तुझे तेरे बाबू जी से पास ले चलता हूँ।'' नन्हे ने सहमते हुए कहा, ''मेरे पिता जी नहीं हैं।'' बालक का भोला चेहरा, सरल आँखें देखकर माली रुक गया। उसका गुस्सा पहले से कुछ कम हुआ और वह बोला, ''तुम्हें ऐसे काम नहीं करने चाहिए। अच्छे बच्चों को ही साथी बनाओ बेटा, अच्छे बच्चे बनो।''

नन्हे को लगा जैसे माली के रूप में उसके जीवन की दिशा बताने वाला कोई गुरु खड़ा है।

उसने उसी क्षण संकल्प किया कि आगे से कोई गलत काम नहीं करूँगा।

यह नन्हे और कोई नहीं, लाल बहादुर शास्त्री थे जो आगे चलकर अपनी सच्चाई, ईमानदारी, सेवा-भावना एवं कर्तव्यनिष्ठा के बल पर देश के प्रधानमंत्री बने।

देश परिवार से बढ़कर है

शास्त्री जी के लिए देश-प्रेम सबसे बड़ा धर्म था। एक बार जब वे जेल में थे, तभी उनके चार वर्षीय पुत्र को टाइफ़ाइड हो गया। जेल के अधिकारियों ने कहा कि यदि शास्त्री जी यह लिखकर दें कि जेल से बाहर आंदोलनकारी गतिविधियों से दूर रहेंगे, तो पैरोल पर छोड़े जा सकते हैं। लेकिन देशभक्त शास्त्री जी यह शर्त कैसे स्वीकार कर सकते थे? बाद में बिना शर्त एक सप्ताह के लिए वे छोड़ दिए गए। एक सप्ताह बीत गया पर पुत्र की हालत में सुधार नहीं हुआ। शास्त्री जी के पुनः जेल जाने का समय आ गया। अधिकारी ने पुनः संदेश भेजा, यदि शास्त्री जी लिखकर दें कि बाहर आंदोलनकारी गतिविधियों में भाग नहीं लेंगे तो उनकी पैरोल की अवधि बढ़ायी जा सकती है। पुत्र को तीव्र ज्वर देख शास्त्री जी व्याकुल हो उठे। साल भर पहले इसी रोग से उनकी पुत्री की मृत्यु हो चुकी थी। उनका पितृहृदय रो रहा था। लेकिन देश को सर्वोपरि मानने वाले शास्त्री जी के लिए अँग्रेज़ अधिकारियों की शर्त मानना आदर्शों तथा स्वाभिमान के विपरीत था। उन्होंने अपने हृदय की कोमल भावनाओं पर नियंत्रण किया और परिवारजनों पर पुत्र की देखभाल का दायित्व सौंप, भरे हृदय से पुनः जेल चले गए। उनके लिए देश परिवार से बढ़कर था।